Vol. 10, Issue: 10, October: 2022
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

आधुनिक काल में आकाशवाणी में संगीत का स्वरूपः एक अवलोकन

ज्योति उपाध्याय
(शोधार्थी) पीएच.डी
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,संगीत विभाग
एम.बी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

१. प्रस्तावना

प्रारंभिक काल से ही आकाशवाणी पर संगीत के कार्यक्रम और उसका उद्‌भव हो गया था। H.R Luthra के अनुसार ''जब भारत में नियमित रूप से प्रसारण शुरू हुए तो दक्षिण भारत में संगीत को सुनने की रूचि उत्पन्न हो गई थी किन्तु ऐसी स्थिति उत्तर भारत में कम थी। आकाशवाणी ने अपने प्रारंभिक काल में ही संगीत के कार्यक्रमों को प्रसारित करना आरंभ कर दिया था। समय काल परिवर्तन के साथ आज संगीत पर आधारित कार्यक्रमों के भी अलग–अलग तरह के कार्यक्रमों के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। इस तरह के कार्यक्रम आकाशवाणी को कई प्रकार के बहुरंग रूप प्रदान कर रहे है। अतः यह प्रमाणित होता है कि जिस प्रकार संगीत के विकास में आकाशवाणी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है उसी प्रकार आकाशवाणी के विकास में संगीत ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लोक संगीत एवं शास्तीय संगीत को समाज में लोकप्रिय बनाने में आकाशवाणी ने खास भूमिका अदा की है। वर्तमान काल में आधुनिक कालाकारों पर शास्त्रीय संगीत को विस्तृत और व्यवस्थित करने का उत्तरदायित्व भी है। यदि कलाकारों के द्वारा रागों की विस्तृत सूची आकाशवाणी को सौंप दी जाय जिससे आकाशवाणी रागों को समय, प्रकृति एवं वैविध्य की रूपरेखा के अनुसार अपने कार्यक्रमों का निर्धारण करके विशिष्ट कलाकारों को विशिष्ट राग गाने का ही निवेदन करे तो संभव रूप से श्रोताओं के लिए रंजकता एवं शैक्षिक दृष्टि से भी विविधता बनी रहेगी।

२.आकाशवाणी में संगीत का स्वरूप

संगीत के कार्यक्रम रेडियो पर प्रारम्भ से ही किसी न किसी रूप में प्रसारित होते रहे है। मगर आज संगीत के कार्यक्रमों के प्रसारण और स्वरूप विकसित व विस्तृत हो चुका है। आधुनिक समय अथवा वर्तमान समय में रेडियो द्वारा संगीत के कई प्रकार के कार्यक्रमों का प्रसारण किया। संगीत के ये अलग–अलग रूप में श्रोताओं के अलग–अलग समूह हो अपनी ओर आकर्षित करते है इसलिए भारतीय समाज में संगीत को सुनने की रूचि बढ़ने लगी थी। अब समाज का वह वर्ग भी संगीत का आनंद ले सकने की स्थिति में आ गया था। जो राजाओं, नवाबों और रईसों की महफिलों में स्थान नहीं पा सकता था। सन् 1966 ई. में शास्त्रीय संगीत से संबधित कार्यक्रमों के प्रसारण का काल 43 प्रतिशत तक करने की घोषणा कर दी। सन् 1968 ई. में युवाओं के लिए विशेष कार्यक्रम युववाणी आरम्भ किया गया। युवा कलाकारों की प्रतिभा को निखारने व आधार प्रदान करके उनको आगे बढ़ाने की प्रेरणा देना इस कार्यक्रम का उद्‌देश्य था। इसी काल में लेह व अलीगढ़ में भी स्टेशन खोले गए। सन् 1971 ई. में विदेशी प्रसारण सेवा सिंधी और रूसी भाषा भी आरम्भ की गयी। विभागीय कलाकारों के वेतनमानों का भी सन् 1971 ई. में पुर्नगठन किया गया। सन् 1973 ई. में लोग एवं क्षेत्रीय संगीत को गरूवार के मासिक अखिल भारतीय कार्यक्रम में प्रसारित किया जाने लगा व इसका नाम भी प्रादेशिक अखिल भारतीय कार्यक्रम रखा गया।

३.स्वतंत्रता से पूर्व आकाशवाणी का स्वरूप

रेडियो के लिए स्वतंत्रता से ठीक पहले का काल काफी महत्वपूर्ण रहा है। इस काल में अधिकारियों का ध्यान मनोरंजन, संगीत एवं संस्कृति से संबधित कार्यक्रमों के प्रसारण की ओर भी जाने लगा था। क्योंकि रेडियो के प्रति लोगों की रूचि एवं लगाव का मुख्य कारण गीत–संगीत, मनोरंजन एवं संस्कृति से संबधित

कार्यक्रमों का प्रसारण करना है। यह बात बड़े अधिकारी भली–भाँति समझ चुके थे। रेडियो के प्रति लोागों की रूचि को और बढ़ाने के लिए एवं इसको और रोचक बनाने के लिए बड़े–बड़े कलाकारों को रेडियो स्टेशनों पर बुलाने का सिलसिला शुरू हो गया और संगीत की अनेकों विधाओं और रूपों पर आधारित कार्यक्रमों का विशेष प्रसारण शुरू हो गया । रेडियो के अधिकारियों की संगीत के कार्यक्रमों के प्रति रूचि यह भी दर्शाता है कि सन् 1940 ई. में हारमानियम को विदेशी वाद्य समझा जाने लगा व इसी कारणवश इसे 1940 ई. में रेडियो को प्रतिबन्धित कर दिया गया। उनका कहना था कि इस वाद्य में भारतीय संगीत की अभिव्यक्ति सच्ची हो सकती है। हारमोनियम वाद्य पर इस प्रकार प्रतिबंध लगा दिया गया कि कोई भी कलाकार इस वाद्य का प्रयोग पूर्णाभ्यास के लिए भी नहीं कर सकता था। इस विषय को लेकर अन्य कई विद्वानों ने भी तर्क दिए एवं हारमोनियम को रेडियो पर प्रतिबन्धित करने का सर्मथन किया।

जिस प्रकार धीरे –धीरे रेडियो का विकास हो रहा था। उसी प्रकार मनोरंजन एवं संगीत से जुड़े लोगों की आवश्यकता बढ़ती गई और इसी पूर्ति के लिए रेडियों की अधिकारी इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए हर संभव कोशिश में जुट गए। ध्यान देने योग्य बात है कि जिस समय रेडियो के विकास की गति अति धीमी थी। वही रेडियो समाज में विभिन्न कारणों से अपना स्थान नहीं बना पा रहा था तो अधिकारियों द्वारा संगीत एवं मनोरंजन के संबध में कार्यक्रमों को अधिक प्रसारित किया जाने लगा और इसी कारणवश अधिकतर लोग रेडियों के साथ जुड़ सके। यह सौभाग्य ही था कि उनका विचार सही निकला। निःसंदेह ही लोग इस प्रकार के प्रसारणों के कारण रेडियो की ओर आकर्षित हुए।

४.स्वतंत्रता के पश्चात आकाशवाणी में संगीत का स्वरूप

15 अगस्त सन् 1947 ई. को भारत आजाद हुआ। भारत में स्वतंत्रता के समय केवल 6 रेडियो स्टेशन थे। इनकी स्थापना **मुंबई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, लखनऊ और तिरूचिरापल्लि** में की गई थी। इन 6 स्टेशनों के अलावा रजवाड़ों में भी कुल पांच ही रेडियो स्टेशन काम कर रहे थे। भारत के नेताओं ने स्वतंत्रता के बाद अपनी संस्कृति की ओर ध्यान दिया और भारतीय गीत–संगीत और संस्कृति से संबधित कार्यक्रमों का प्रसारण प्रचुर मात्रा में होने लगा। देश के विभाजन के काल में न केवल रेडियो स्टेशनों का बटवारा कर दिया गया था व साथ ही सभी कर्मचारियों को भारत में या पाकिस्तान में रहने जाने का विकल्प भी दिया गया था। 2 अक्टूबर 1947 सन् को गॉधी जी के जन्म दिन पर रेडियो का विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस काल में सभी नेताओं का नजरिया रेडियों के प्रति सकारात्मक था। रेडियो को हमारे नेता अपनी विकृत संगीत और सांस्कृतिक परम्पराओं को पुनः विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण व सशक्त साधन के रूप में प्रयोग करना चाहते थे।

आजादी के बाद देश के पहले सूचना एवं प्रसारण मंत्री के तौर पर सरदार पटेल को नियुक्त किया गया। सरकार ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रेडियो के विकास के लिए नई–नई योजनाएं बनाई। ये सभी योजनाएं रेडियो के विकास के लिए प्रमुख साबित हुई। इसके साथ – साथ अन्य भी कई योजनाएं बनाई गई। जिसे पायलेट प्रोजेक्ट का नाम दिया गया। इस प्रोजेक्ट में देश के सभी हिस्सों में रेडियो स्टेशन स्थापित करने की योजना बनाई गई। 1 नवम्बर सन् 1947 ई0 को इस योजना के तहत जलंधर में रेडियो स्टेशन खोला गया।

इस स्टेशन के द्वारा जहाँ पंजाब की जनता को देश में चल रहे वर्तमान हालातों की सभी सूचनाएं प्रसारित की गई, वही गीत–संगीत एवं संस्कृति से संबधित कार्यक्रमों के माध्यम से उनकी शारीरिक और मानसिक कठिनाईयों के विषय में भी चर्चाएं की गई। जम्मू में भी 1 दिसम्बर सन् 1947 को एक रेडियो स्टेशन का उदघाटन कर दिया गया। इस रेडियो स्टेशन द्वारा जम्मू और आस–पास के सभी क्षेत्रीय गीत–संगीत एवं संस्कृति से संबधित कार्यक्रमों का प्रसारण करना आरंभ कर दिया गया। इसके प्रसारण से दूर बैठे लोग भी इस देश की संस्कृति के बारे में जानने लगे। जम्मू में रेडियो स्टेशन की स्थापना ने मानो विकास का एक नया दौर प्रारंभ कर दिया और अगले वर्ष सन् 1948 में कटक, गुवाहाटी, विजयवाड़ा, श्रीनगर, नागपुर में

एक के बाद एक कई रेडियो स्टेशन खोले गए। विभिन्न स्थानों पर आकाशवाणी केन्द्रों की स्थापना होने के कारण क्षेत्रीय समस्याओं एवं संस्कृति सें संबधित कार्यक्रमों के प्रसारण भी बढ़ने लगे।

इलाहाबाद व अहमदाबाद में सन् 1948 ई. में रेडियो स्टेशन ने काम करना आरंभ कर दिया। इसके बाद सन् 1950 में धारवाड़ व कोझीकोड में भी नए रेडियो स्टेशन खोले गए। स्टेशनों का विकास अति तीव्र गति से होने के कारण मात्र तीन साल में ही आकाशवाणी केन्द्रों की कुल 12 प्रतिशत भूभाग पर रेडियो सुना जाने लगा।

संगीत नाटक अकादमी की स्थापना भी सन् 1953 ई. में की गई एवं 28 जनवरी सन् 1954 ई. को इसका उद्घाटन किया गया। Opera का अखिल भारतीय कार्यक्रम भी सन् 1956 ई. में किया गया। 26 मई सन् 1957 ई. को प्रथम सुगम संगीत समारोह का आयोजन किया गया। मनोरंजन एवं फिल्मी संगीत के प्रसारण के लिए सन् 1957 ई. को ही विविध भारती की सेवा आरंभ की गई। शुरूआती दौर में विविधभारती के कार्यक्रमों में हवामहल, जयमाला प्रमुख रहे। विविध भारती आज अपने 52 वर्ष पूरे कर चुकी है तब भी ये कार्यक्रम श्रोताओं में उतने ही लोकप्रिय है। हिन्दी फिल्मी गीतों का प्रसारण जयमाला कार्यक्रमों में किया जाता था और इस कार्यक्रम की विशेषता यह थी की इसमें फौजी भाईयों की पसंद के गाने सुनाये जाते थे। सोमवार से शुक्रवार तक सभी फौजी भाईयों के लिए यह कार्यक्रम प्रसारित होता है। अभिनेत्री 'नरगिस' ने विविध भारती पर जयमाला का पहला कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। रविवार का जो प्रसारित होने वाला जयमाला कार्यक्रम था, उसमें फौजी अपने घर वालों और मित्रों को संदेश देते है कि इस प्रकार अन्य कई और फौजी भी अपने–अपने घर वालों मित्रों, सगे संबधियों को रेडियो के माध्यम से संदेश भेजते थे।

५.वर्तमान में आकाशवाणी में संगीत का स्वरूप

आकाशवाणी में में आज 336 प्रसारण केन्द्र है। 143 मडियन वेब 54 वेब और 161 एफएम चैनलों के माध्यम से प्रकाशित की जा रही है। 99.13 प्रतिशत जनसंख्या और 61.42 तक अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। गृहप्रसारण सेवा में 24 भाषा और 146 शास्त्रीय भाषाओं में और बाहरी प्रसारण सेवा में कुल सात सात सौ भाषा 10 विदेशी भाषा और 17 राष्ट्र भाषा में प्रसारण कर रही है। संगीत के कार्यक्रम रेडियो पर लगभग 40 प्रतिशत हिस्से में प्रसारित होते है। एफ.एम. और विविध भारती चैनल पर 65 प्रतिशत कार्यक्रम संगीत पर ही आधारित होते है। आकाशवाणी और अन्य रेडियो स्टेशन के भी अपने–अपने कलाकार होते है। आकाशवाणी द्वारा इनका चयन किया जाता है और एक प्रमाणिक रेडियो कलाकार को घोषित करती है। रेडियो पर आम ऐसे कलाकारों की सेवा बहुत अधिक है । अब जमाना बदल गया है आज के कलाकार रेडियो पर कार्यक्रम देने से परहेज नहीं करते, बल्कि इसमें गर्व महसूस करते है। आज के समय में इनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी है तथा निरंतर संख्या में बढ़ावा होता जा रहा है। जिस प्रकार रेडियो ने विकास किया वैसे ही संगीत एवं दूसरे साधनों ने भी समाज में एक नयी पहचान बनाई है। सारगर्भिता एवं साधना यह शास्त्रीय संगीत का एक नया रूप है ऐसा प्रायः अनादि काल से माना गया है। गुरू के द्वारा सीखने पर ही संगीत की यह कला अपने शुद्ध और परिष्कृत रूप में रह सकी है। गुरू के प्रति अथाह श्रद्धा निष्ठा व गहन साधना द्वारा ही संगीत को सजीव एवं सारगर्भित बनाती है। घरानों के घेरे में यह कला उन्मुक्त रूप से प्रवाहित नहीं हो सकी और इसलिये वह अपने परिष्कृत रूप को साधना के धरातल पर लेकर आगे बढ़ी है।

आज के आधुनिककाल में सुगम संगीत एवं उपशास्त्रीय शैलियों पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। वर्तमान काल में आकाशवाणी के द्वारा ध्रुपद एवं धमार की जग ख्याल शैली को अधिक समय दिया जाता है। प्रायः जनरूचि को दृष्टिगत रखते हुए शुद्ध राग रागनियों पर आधारित संगीत की अपेक्षा मिस्र व सरल रागों के प्रसारण का अधिक्व हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप में अनेकों जटिल परन्तु अत्यन्त प्रभावपूर्ण राग प्रचलन से बाहर हो रहे है। अत्यधिक देखने में आता है कि कम समय में राग प्रस्तुतिकरण करने की चेष्टा में आकाशवाणी के कलाकार राग के आलाप, स्वरविस्तार और भावपक्ष की अवहेलना करते हुए अपने राग प्रदर्शन में चमत्कारिता पर बल देते है। रागवाचक स्वर संगतियों का दोहराव और आड़कुआड़ लय प्रदर्शन

Vol. 10, Issue: 10, October: 2022
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

करते हुए गतिक तानों के माध्यम द्वारा वह श्रोताओं की बौद्धिक और आत्मिक तुष्टि का प्रयास करते है और जनसामान्य भी संगीत के परिष्कृत एवं शुद्ध रूप के श्रवण व दर्शन से वंचित रह जाता है।

आधुनिक काल में कलाकारों की इस मनोवृत्ति के बढ़ने का एक कारण है – संगीत के कार्यक्रमों का पूर्ण नियोजित न होना भी है। शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता के साथ – साथ उसके स्तर को भी ऊंचा उठाने के लिए डा. केसकर द्वारा अनेकों प्रयत्न किए गए। आकाशवाणी के कार्यकर्ता अच्छे कार्यक्रमों की प्रस्तुतिकरण को अपना कर्तव्य समझते थे किन्तु आज के युग में आकाशवाणी की सारी कार्यप्रणाली अत्यन्त निर्जीव एवं यन्त्रवत हो गई है।

नवीनीकरण की प्रक्रिया थम सी गई है। कलाकारों को पूर्व सूचना न होने के कारण वह भी नई प्रस्तुती प्रस्तुत नहीं कर पाते एवं पुराने रागों को ही दोहराते रहते है। इसके परिणामस्वरूप कार्यक्रमों में नवीनता नहीं आ पाती एवं विविधता का अभाव बना रहा है। इन सभी खामियों का समाप्त करने के लिये यह सुझाव भी दिया जाता है कि चयन समिति द्वारा जिन कालाकारों का चयन किया गया है वह वास्तविक अर्थो में कलाकार है एवं उनका विशिष्ट श्रोता पर अपना पूर्ण अधिकार हो। आकाशवाणी को इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है यह तो बहुत स्वाभाविक है कि एक अच्छा कलाकार जिसको अपने क्षेत्र का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त है वह कम से कम 50–60 या 60–70 राग तैयार रखता ही होगा। जिससे परिस्थितिवश वह स्वाभाविक रूप से तैयार रहे एवं समय आने पर क्षमतानुसार अपनी दक्षता का परिचय दे सके। वैसे तो संगीत जगत में यह माना जाता रहा है कि राग का सागर इतना असीम गहरा है कि एक ही राग सीखने में और गाने में व्यक्ति का संपूर्ण जीवन व्यतीत हो जाए किन्तु, व्यावहारिक ज्ञान में यह संभव नहीं है क्योंकि इस वैज्ञानिक युग में जहां समय – समय पर नये –नये अविष्कार एवं निरन्तर प्रगति होती जा रही है वहां इस सोच के साथ एक कलाकार कभी आगे नहीं बढ़ पाएगा। अतः एक कलाकार के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि आधुनिक व्यवस्थाओं एवं उपकरणों का पूर्ण उपयोग करते हुए साथ के साथ संगीत के प्राचीन चिन्तकों एवं मनीषियों द्वारा प्रस्थापित मान्यताओं और सिद्धान्तों को साथ लेकर दिशा निर्धारण किया जाय। वर्तमान काल में आधुनिक कालाकारों पर शास्त्रीय संगीत को विस्तृत और व्यवस्थित करने का उत्तरदायित्व भी है। यदि कलाकारों के द्वारा रागों की विस्तृत सूची आकाशवाणी को सौंप दी जाय जिससे आकाशवाणी रागों को समय, प्रकृति एवं वैविध्य की रूपरेखा के अनुसार अपने कार्यक्रमों का निर्धारण करके विशिष्ट कलाकारों को विशिष्ट राग गाने का ही निवेदन करे तो संभव रूप से श्रोताओं के लिए रंजकता एवं शैक्षिक दृष्टि से भी विविधता बनी रहेगी।

६.शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

शास्त्रीय संगीत का भारतीय संस्कृतिक परम्परा में विशिष्ट महत्व रहा है, जो संगीत विशिष्ट शास्त्र अथवा नियमों के अनुसार व्यवहार में लाया जाता है वह शास्त्रीय संगीत कहलाता है। मुख्य रूप से भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रवाह अलग–अलग धाराओं के रूप में हो रहा है। 1. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति 2. कर्नाटकीय संगीत पद्धति। इनको प्रायः उत्तर भारतीय संगीत पद्धति और दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति के नामों से भी जाना जाता है। भारतीय संगीत में शास्त्रीय संगीत की बहुत सी विधाएं प्रचार में रही है। उदाहरण के तौर पर जैसे – ध्रुवागान, प्रबन्धगान, ध्रुपद, धमार तथा ख्याल व तराना आदि। परन्तु आज के इस आधुनिक युग में इनमें से कुछ विधाएं विलुप्त हो चुकी है और कुछ गायन शैलियां मात्र भी प्रचलन में है। बिल्कुल इसी प्रकार दक्षिण भारत में भी विभिन्न प्रकार की गायन शैलिया प्रचार– प्रसार में रही है। जैसे–पदम, कृति, जावली, तिल्लाना व वर्णन आदि।

रेडियो में भारत में आगमन व प्रसारणों से पहले संगीत का प्रस्तुतिकरण प्रत्यक्ष रूप से श्रोताओं के सामने किया जाता था पर अब धीरे–धीरे जबकि रेडियो ने भारत में कार्यक्रमों का प्रसारण करना प्रारम्भ किया तो उनमें संगीत के कार्यक्रमों को विशेष स्थान प्राप्त हुआ है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का रेडियो पर प्रसारण मुख्य रूप से स्वतंत्रता के बाद ही सुचारू रूप से प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में शास्त्रीय संगीत के कलाकारों ने रेडियो पर शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने में रूचि नहीं दिखाई थी, परन्तु कुछ समय पश्चात कुछ अच्छे नामी कलाकारों ने रेडियो के माध्यम से अपनी कला को श्रोता तक पहुँचाने का सरल माध्यम समझा। व कई कार्यक्रम पेश किए। उसके बाद तो फिर कई अन्य कलाकारों द्वारा भी रूचि दिखाई गई व यह एक सिलसिला बन गया, फिर नियमित रूप से रेडियो पर कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाने लगे।

रेडियो पर शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत अधिक तो नहीं है किन्तु फिर भी शास्त्रीय सगीत को समझने, सुनने और प्रस्तुत करने वाला एक विशेष वर्ग रेडियो के श्रोता के रूप में नियमित रूप से विद्यमन है। केवल जे. कुमार के अनुसार ''विविध भारती का शुभारंभ 2 अक्टूबर सन् 1951 इ. को सुगम संगीत अथवा मनोरंजन के कार्यक्रमों के लिए किया गया। शीघ्र ही रेडियो से फिल्मी संगीत को बंद कर दिया गया। उस समय पर तर्क के रूप में यह कहा गया है कि फिल्मी संगीत अच्छे स्तर का ही है और यह श्रोताओं पर गलत प्रभाव डालता है। इस समय पर बी.वी. केसकर सूचना एवं प्रसरण मंत्री थे। वह शास्त्रीय संगीत को भी भली–भॉति समझने वाले थे। उस समय पर इस प्रकार एक ऐसा दौर आया जब फिल्मी संगीत से शास्त्रीय संगीत की तुलना में रेडियो पर शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत के कार्यक्रमों का प्रारम्भ अधिक होने लगा।

७.संगीत शिक्षा से संबधित कार्यक्रम

समाज में संगीत को उसकी पहचान दिलाने वाले लोगों की रूचि इस ओर बढ़े इसके लिए संगीत की शिक्षा व इसके प्रचार–प्रसार के लिए संगीत से जुड़े संगीत शिक्षा से संबधित कार्यक्रमों का निर्माण व प्रसारण किया जाता है क्योंकि शास्त्रीय संगीत आम नागरिक या जिनको इसकी समझ नहीं है उन लोगों तक इसकी समझ को विकसित करना था। शास्त्रीय संगीत के जटिल होने के कारण एवं शास्त्रीय संगीत की तकनीकी ज्ञान के अभाव के कारण शास्त्रीय संगीत के गूढ नियमों को भी बड़े ही सरल तरीके से इन कार्यक्रमों के माध्यम से आम जनता को समझाया जाता है। विविध भारती द्वारा प्रसारित किया जाने वाला कार्यक्रम 'संगीत सरिता' इस दिशा में एक सुंदर प्रयास है। यह कार्यक्रम प्रातः 7:30 बजे प्रसारित किया जाता है। इस कार्यक्रम के द्वारा विविध भारती द्वारा अपने श्रोताओं में संगीत की समझ पैदा करने का सार्थक प्रयास किया गया है। इस कार्यक्रम द्वारा किसी आमंत्रित विशेषज्ञ द्वारा श्रोताओं को संगीत की समझ बहुत ही सरल अंदाज में दी जाती है। आम श्रोताओं में शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने वाला यह प्रमुख कार्यक्रम माना जाता है। इस कार्यक्रम में श्रोताओं को शास्त्रीय संगीत और उसके महत्व को समझाने के लिए रागों पर आधारित फिल्मी गीतों को भी प्रसारित किया जाता है। अन्य कार्यक्रम भी जैसे संगीत पाठ कार्यक्रम भी श्रोताओं को संगीत की शिक्षा देने के लिए प्रसारित किए जाते है।

रेडियो में इस प्रकार के कार्यक्रम स्टुडियो में ही एक संगीत की कक्षा का वातावरण तैयार करके उसको रिकार्ड कर लिया जाता है और समय पर प्रसारित कर दिया जाता है। इस प्रकार के कार्यक्रम के लिये स्टुडियों में ज्यादा विद्यार्थियों को नहीं बैठाया जाता है। किन्तु प्रसारण के समय इसका लाभ देश –विदेश के असंख्य विद्यार्थी उठा सकते है। इसी प्रकार संगीत प्रवचन और हरिकथा दक्षिण भारत में काफी पसंद किए जाते है। इस तरह के कार्यक्रमों में महाभारत, रामायण व अन्य अनेक वैदिक और पौराणिक कथाओं का सुनाया जाता है और बीच–बीच में कथा के अंशों पर आधारित गीतों और भक्ति गीतों का गायन भी किया जाता है। इस प्रकार के कार्यक्रमों में कुछ संगीतकार कलाकारों का होना भी आवश्यक है। अतः इसकी प्रस्तुति देने के लिए कलाकारों को कथा वाचन और संगीत दोनों में कुशल होना चाहिए।

८.सारांश

आकाशवाणी ने शास्त्रीय संगीत को समाज में लोकप्रिय बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। प्रारम्भ से ही आकाशवाणी पर संगीत के कार्यक्रम प्रसारित होते रहते है। किन्तु वर्तमान संगीत के कार्यक्रमों के स्वरूप एवं प्रसारण विकसित एवं विस्तृत हो चुका है। वर्तमान अथवा आधुनिक समय में आकाशवाणी

Vol. 10, Issue: 10, October: 2022
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

द्वारा संगीत के कई प्रकार के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। संगीत के ये अलग–अलग रूप श्रोताओं के अलग–अलग समूह को अपनी ओर निरन्तर आकर्षित करते है। आज की व्यवस्था में आकाशवाणी के माध्यम से यह कला सब के लिये सुलभ हुई है व इसके साथ ही इस कारण नए कलाकारों में भी शास्त्रीय संगीत की जटिलता और गहराई में जाने की चेष्टा भी कम हो गई है। एक तरफ इसे हम आकाशवाणी का अथक प्रयास कहेंगे जिससे यह लोकप्रिय हो पाया है व दूसरी ओर शास्त्रीय संगीत के साधनामय स्वरूप को कुछ आघात भी पहुँचा है। ऐसा मानना भी संभवतः असंगत नहीं है।

जिस प्रकार मानव समाज में तकनीकी ज्ञान के प्रति आकर्षण बढ़ता गया। उसी प्रकार रेडियो, दूरदर्शन, संचार एवं मनोरंजन से संबधित अनेकों साधनों एवं माध्यमों का अविष्कार हुआ। समस्त विश्व एवं विशेषकर भारत में रेडियो के आने एवं विकास में संगीत ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिस प्रकार समाज में रेडियो का विकास हुआ, उसी प्रकार संगीत ने भी अपना दायरा बढ़ा लिया। रेडियो द्वारा संगीत को बहुत बड़े समाज तक पहुँचाने में बहुत बड़ा योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. प्रसारण एवं फोटो पत्रकारिता, ओम गुप्ता, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
२. प्रसारण तकनीकी, विजय शर्मा, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
३. जनसंचार एवं पत्रकारिता, डा. रेशमा नदाफ, संजय प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।
४. रेडियो और संगीत, अशोक कुमार यमन ,कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
५. Radio Broadcasting: A reader's Guide Dr. K. Parameswaran, Authors press Hauz Khas, New Delhi.
६. दूरदर्शन विविध आयाम, सुशील कुमार सिन्हा, राज पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
७. सूचना समाज एवं संचार, धर्मेद्र सिंह, नेहा पब्लिकेशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
८. विज्ञान शिक्षण तकनीकी और कम्प्यूटर हेमंत कुमार, इंडिपेंडेंट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
९. Broadcasting and Development Communication, Ved Prakash Gandhi, kanishka Publishers & distributers, New Delhi.